क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo.ca

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या.....

दिनाँक.....

प्रकाशनार्थ

8 फरवरी, 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

''क्रियायोग ध्यान से अन्तःकरण में कुम्भ और अर्धकुम्भ का दर्शन''

8 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि मानव अपने वर्तमान स्वरूप से अनन्त सर्वव्यापी विश्व चैतन्य की पूर्ण अनुभूति और अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है । जिस प्रकार पचास वाट के विद्युत बल्ब में हजार वाट विद्युत धारा प्रवाहित करने पर बल्ब फ्यूज हो जाता है उसी प्रकार मानव स्वरूप में अनन्त विश्वव्यापी परमचैतन्य शक्ति का प्रवाह होने पर मनुष्य उसे सहन नहीं कर सकता है । क्रियायोग के अभ्यास से साधक का स्वरूप धीरे-धीरे रूपान्तरित होने लगता है और अन्ततः परमात्मा की अनन्त सर्वव्यापी चैतन्य शक्ति को पूर्ण प्रकाशित करने के उपयुक्त हो जाता है। स्वरूप रूपान्तरण की इस आध्यात्मिक प्रक्रिया को कुम्भ और अर्धकुम्भ के रूप में संबोधित किया जाता है। अर्धकुम्भ हर छह साल के बाद तथा कुम्भ बारह वर्ष के बाद लगता है । क्रियायोग की भक्तिपूर्वक छह साल साधना करने पर साधक के स्वरूप में मुलायम अंग जैसे - हृदय, फेफड़ा, गुर्दा, त्वचा आदि का पूर्ण रूपान्तरण हो जाता है, ये सारे अंग नये हो जाते हैं । बारह साल क्रियायोग की साधना के द्वारा शरीर का पूरा का पूरा कायाकल्प हो जाता है । शरीर की हड्डियाँ तथा सम्पूर्ण अस्तित्व बदल कर नया हो जाता है और इस स्थिति में उसका स्वरूप ईश्वर के सर्वव्यापी स्वरूप को प्रकट करने में उसी प्रकार समर्थ हो जाता है जैसे सूर्य के प्रकाश

को चन्द्रमा प्रकट करता है । सामान्य जीवन शैली को जीने पर जहाँ मनुष्य बीमारी, बुढ़ापा, स्मृति का लोप होना, शारीरिक और मानसिक अक्षमता का शिकार होता है वहीं पर क्रियायोग का अभ्यास करने वाले साधक दिन प्रतिदिन चिर युवावस्था तथा शरीरिक, मानसिक निरोगिता और आध्यात्मिक उन्नति की तरफ आनन्दपूर्वक जीवन-यात्रा करते हैं । इस प्रकार स्वरूप का अर्धरूपान्तरण अपने अंदर अर्धकुम्भ तथा पूर्ण रूपान्तरण कुम्भ के प्रकट होने की घटना है। मानव का स्वरूप प्रयागराज है जहाँ प्रकिष्ट यज्ञ (क्रियायोग साधना) का अभ्यास करके साधक सम्पूर्ण आध्यात्मिक शक्तियों और सिद्धियों की प्राप्ति कर अज्ञानता से मुक्त हो जाता है । इस अवस्था की प्राप्ति को ही मोक्ष कहा गया है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग का अभ्यास कराते हुए स्पष्ट किया कि मानव स्वरूप में सम्पूर्ण तीर्थ व धाम, गंगा, यमुना, सरस्वती, संगम, त्रिवेणी, वेद, शास्त्र, गीता, पुराण, उपनिषद आदि सब कुछ परमचैतन्य रूप में विद्यमान है । मानव स्वरूप में सिर व रीढ़ के अंदर स्थित सात दिव्य ज्ञानकेन्द्र अपने अंदर सात स्वर्ग तथा सात पाताल की शक्ति के रूप में स्थित हैं । सात ज्ञानकेन्द्रों का सुषुप्त रुप सात पाताल तथा इनका जागृत रुप सात स्वर्ग है । क्रियायोग साधना के द्वारा साधक सिर व रीढ़ में स्थित सप्त ज्ञानकेन्द्रों में सुषुप्त अलौकिक ज्ञान के प्रकाश को जागृत कर लेता है जिसे सशरीर स्वर्ग की अनुभूति कहा गया है। ऐसी अवस्था में काल का प्रभाव समाप्त हो जाता है । साधक के अंदर अतीन्द्रिय दृष्टि प्रकाशित हो जाती है । वह भूत, भविष्य, वर्तमान के सम्पूर्ण रहस्यों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है जिसे त्रिकालग्य अवस्था कहा गया है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि क्रियायोग साधना के द्वारा सिर व रीढ़ में सुषुप्त ज्ञान प्रकाश के जागृत होने पर साधक दृश्य जगत से संयुक्त अदृश्य जगत में चैतन्यपूर्वक प्रवेश करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है । तीन प्रकार के ब्रह्माण्ड हैं और इसी प्रकार मनुष्य की तीन शरीर है । जागृत अवस्था में मनुष्य भौतिक शरीर के साथ रहता है जिसमें वह इन्द्रिय, मन, बुद्धि की सीमित अनुभूति में जीवन व्यतीत करता है । इन्द्रियाँ, मन व बुद्धि की दृष्टि सीमित है । इनसे सत्य की अनुभूति संभव नहीं है । मनुष्य स्वप्न की अवस्था में सूक्ष्म शरीर की अनुभूति में रहता है । सूक्ष्म शरीर की अनुभूति होने पर मनुष्य इच्छामात्र से कहीं पर भी तत्क्षण प्रकट हो सकता है, किसी भी विचार को दृश्य रूप में उसी प्रकार प्रकट कर सकता है जिस प्रकार स्वप्न में हम जो कुछ सोचते हैं वह तुरन्त घटित हो जाता है । कारण शरीर की अनुभूति मनुष्य गहन

निद्रा की अवस्था में करता है । गहन निद्रा में मनुष्य हर प्रकार के अहंकार (सीमित भाव) से मुक्त होता है। गहन निद्रा में मनुष्य असीमता और सर्वव्यापकता की अनुभूति में होता है इसलिए गहन निद्रा सभी को सर्वाधिक प्रिय है । स्वामी जी ने आगे कहा कि भौतिक, सूक्ष्म और कारण जगत माया का आवरण है जिसे किसी वस्तु की छाया या प्रतिबिम्ब कहते हैं । जिस प्रकार काया के साथ छाया का संबंध है उसी तरह सर्वव्यापी चैतन्य परब्रह्म का भौतिक, सूक्ष्म व कारण शरीर से संबंध है । मोक्ष अवस्था में साधक परब्रह्म के साथ उसी तरह की एकता का अनुभव करता है जैसे दहकती हुई अग्नि के साथ गर्मी । मुक्तामा वह है जो इच्छानुसार भौतिक, सूक्ष्म और कारण स्वरूप में प्रकट होने और अदृश्य होने की सामर्थ्य रखता है । भौतिक, सूक्ष्म और कारण जगत का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्याधिरहित दस लाख वर्ष जीवन की आवश्यकता पड़ती है । जो लोग इस लम्बी अवधि को विद्रोह की दृष्टि से देखते हैं उनके लिए क्रियायोग जेट विमान की तरह तीव्र गति से एक ही जीवनकाल में पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति करने की सरलतम् आध्यात्मिक प्रविधि है ।

क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, पिफनीलैन्ड, साउथ अपफ्रीका, जर्मनी, इटली, लंडन आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6 बजे तक और मोरी रोड पर महर्षि पतंजलि धाम परिसर में रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता